[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **1801** **I**

Unique Paper Code : 2052103503

Name of the Paper : Hindi Aalochna

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : V

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

निर्देश :

(क) इस प्रश्नपत्र के मिलते ही ऊपर निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

(ख) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांशों के संदर्भ को स्पष्ट करते हुए व्याख्या कीजिए। 10+10+10=30

(क) प्राचीनकाल के अभिनयादि के सम्बंध में तात्कालिक कवि लोगों की और दर्शक मंडली की जिस प्रकार रुचि थी वे लोग तदनुसार ही नाटकादि दृश्यकाव्य रचना कर के सामाजिक लोगों का चित्त विनोद कर गये हैं, किन्तु वर्तमान समय में इस काल के कवि तथा सामाजिक लोगों की रुचि उस काल की अपेक्षा अनेकांश में विलक्षण है इससे संप्रति प्राचीन मत अवलम्बन करके नाटक आदि दृश्यकाव्य लिखना युक्तिसंगत नहीं बोध होता।

P.T.O.

अथवा

मौलिकता कथानक में नहीं है, उस कथानक से सिरजा क्या गया है, उसमें है।

इस दृष्टि से 'शक्तिपूजा' में शक्ति-संधान की रचनात्मक व्याख्या है और इसका मूल सूत्र उस परामर्श में है, जो जाम्बवान पराजय की मनःस्थिति में डूबे राम को देते हैं – 'शक्ति की करो मौलिक कल्पना'। अर्थात् शक्ति का संधान मौलिक रूप में ही संभव है, अनुकरणात्मक रूप में नहीं। 'कामायनी' के मनु और 'शक्तिपूजा' के राम की हताश मनःस्थिति एक जैसी है।

(ख) अगर कविता को शब्दों की मीनाकारी ही मान लिया जाये तब यह संगत भी है। 'तार सप्तक' की कविता वैसी जड़ाऊ कविता नहीं है, वह वैसी हो भी नहीं सकती। जमाना था जब तलवारें और तोपें भी जड़ाऊ होती थीं, पर अब गहने भी धातु को सांचों में ढालकर बनाये जाते हैं और हीरे भी तप्त धातु की सिकुड़न के दबाव से बँधे हुए कणों से। 'तार सप्तक' में रूप सज्जा को गौण मानकर अधिक से अधिक सामग्री देने का उद्योग किया गया। इसे पाठक के प्रति ही नहीं, लेखक के प्रति भी कर्तव्य समझा गया।

अथवा

तुलसीदास ने राम और सीता के विवाह में यह दिखलाया है कि विवाह प्रेम की परिणति है। यद्यपि सीता की प्रीति पुरातन है, फिर भी लोक-व्यवहार की दृष्टि से कंकन किंकिन नूपुर धुनि में राम का मदन दुन्दुभी सुनना, सियमुख की तरफ नयन चकोरों का

देखना, और सीता द्वारा राम को हृदय में बिठाकर पलक-कपाट लगा देना आदि क्रियाओं का वर्णन तुलसी के मर्मी कवि हृदय का परिचय ही नहीं देता, उनके रूढ़ियों को तोड़ने वाले साहस का भी परिचय देता है। तुलसी केवल भक्त नहीं है, वे प्रेम और सौन्दर्य के कवि भी हैं।

(ग) एक ही घटना या स्थिति से सभी मनुष्य समान रूप में प्रभावित नहीं होते। हर आदमी की मनोवृत्ति और दृष्टिकोण अलग है। रचना कौशल इसी में है कि लेखक जिस मनोवृत्ति या दृष्टिकोण से किसी बात को देखे पाठक भी उसमें उससे सहमत हो जाए। यही उसकी सफलता है। इसके साथ ही हम साहित्यकार से भी आशा रखते हैं कि वह अपनी बहुज्ञता और अपने विचारों की विस्तृति से हमें जागृत करें, हमारी दृष्टि मानसिक परिधि को विस्तृत करें – उसकी दृष्टि इतनी सूक्ष्म, इतनी गहरी और इतनी विस्तृत हो कि उसकी रचना से हमें आध्यात्मिक आनन्द और बल मिले।

अथवा

कवि सौन्दर्य से प्रभावित रहता है और दूसरों को भी प्रभावित करना चाहता है। किसी रहस्यमयी प्रेरणा से उसकी कल्पना में कई प्रकार के सौन्दर्यों का जो मेल आप से आप हो जाया करता है उसे पाठक के सामने भी प्रायः रख देता है जिस पर कुछ लोग कह सकते हैं कि ऐसा मेल क्या संसाद में बराबर देखा जाता है। मंगल-शक्ति के अधिष्ठान राम और कृष्ण जैसे पराक्रमशाली और धीर है वैसा ही उनका रूप-माधुर्य और उनका शील भी लोकोत्तर है। लोक-हृदय आकृति और गुण, सौन्दर्य और सुशीलता, एक ही अधिष्ठान में देखना चाहता है।